ISSN: 2456–5474 RNI No.UPBIL/2016/68367 Vol.-1* Issue-4* May- 2016
Innovation The Research Concept

पांडेय बेचन शर्मा उग्र का कथा साहित्यः आत्मकथात्मक विवेचन

सुमन वर्मा
व्याख्याता,
हिंदी विभाग,
राजकीय महाविद्यालय, धौलपुर
राजस्थान, भारत

Abstract

परिस्थिति-निर्मित और शोषित जीवन व्यतीत करने वाले हिंदी साहित्य के प्रसिद्द साहित्यकार एवं पत्रकार पांडेय बेचन शर्मा 'उग्र' एक यथार्थवादी लेखक थे जिनकी लेखनी यथार्थ चित्रण हेतु सदैव समस्त सीमाओं को लांघने के लिए तैयार थी। हिंदी साहित्य की यथार्थवादी लेखन परंपरा से जुड़कर उन्होंने लेखन करते समय केवल आत्माभिव्यक्ति का ध्यान रखा, न कि लोगों की आलोचनाओं का। साहित्य सृजन प्रतिभा के धनी उग्र जी ने बचपन में ही कविता लेखन कर 'पूत के पाँव पालने में दिख जाते हैं' कहावत को चरितार्थ कर दिया।

प्रियप्रवास की शैली में उनके द्वारा रचित प्रबंध काव्य "ध्रुवचरित्" एवं अन्य अनेकों कविताऐं, नाटक, उपन्यास, लघुकथाऐं, पत्रकारिता के क्षेत्र में उनके द्वारा प्रकाशित और सम्पादित पत्र आदि उनके साहित्य प्रेम और उनकी साहित्य साधना को प्रकट करते हैं और साथ ही, यह भी सिद्ध करते हैं कि वह एक सच्चे साहित्यकार थे जिनका उद्देश्य समाज के आदर्श को प्रस्तुत करना नहीं था, अपितु उनका उद्देश्य था अपने सामाजिक परिदृश्य का यथार्थ चित्रण करना।साहित्य लेखन मार्ग में उत्पन्न प्रत्येक बाधा पर विजय प्राप्त करने की क्षमता के धनी उग्र जी ने स्वयं को लेखन के दौरान किसी भी सीमा से बाँध कर नहीं रखा और उन्मुक्त होकर अपने अनुभवों को शाब्दिक अभिव्यक्ति प्रदान की।

प्रस्तुत शोधपत्र के अंतर्गत लेखिका ने पांडेय बेचन शर्मा 'उग्र' के यथार्थवादी लेखन एवं उनके कथा साहित्य में आत्मकथात्मक तत्व की उपस्थिति को प्रकट किया है और साथ ही, उनके उदाहरण से यह सिद्ध करने का प्रयास किया है कि साहित्यकार परिस्थितियों द्वारा निर्मित होते हैं जिनसे प्रभावित होकर वे साहित्य की विभिन्न विधाओं से जुड़कर अपनी परिस्थितियों को प्रस्तुत एवं प्रतिबिंबित करते हैं।

मुख्य शब्दः कथा, आत्मकथात्मक, परिस्थिति-निर्मित, पूत, पाँव, सृजन, तत्व, विधा ।

प्रस्तावना

साहित्य का एक पक्ष यथार्थ भी है जिसका तात्पर्य साहित्य में समाहित आधारभूत वास्तविकता से है जो विभिन्न विधाओं के अंतर्गत लेखन का आधार बनता है। व्यापक रूप में साहित्य का वर्गीकरण आदर्शवादी साहित्य, यथार्थवादी साहित्य एवं आदर्शोन्मुख यथार्थवाद के रूप में किया जा सकता है।

आदर्शवादी साहित्य, जैसा नाम से स्पष्ट है, के अंतर्गत समाज का आदर्श रूप रचनाओं के माध्यम से प्रस्तुत किया जाता है, जिससे पाठक कुछ प्रेरित हो सकें। प्रायः, भय और आलोचना से मुक्त रहने हेतु साहित्यकार आदर्शवादी साहित्य का सृजन किया जाता है जिससे उन पर किसी भी प्रकार की ऊँगली न उठाई जाए और वे शांतिपूर्ण तरीके से साहित्य लेखन करते रहें।

इसके विपरीत, यथार्थवादी साहित्य के अंतर्गत अपरिवर्तनीय रूप से यथार्थ का चित्रण किया जाता है, भले ही वह विद्रूपता या विषमताओं से युक्त हो। आदर्शोन्मुख यथार्थवाद का तात्पर्य ऐसे साहित्य से है जिसमें एक ओर यथार्थ चित्रित किया जाता है, और साथ ही कथानायक या अन्य के माध्यम से यह संदेश भी दिया जाता है कि आदर्श

आचरण या स्थिति क्या होनी चाहिये, अर्थात हम कैसे यथार्थ में जीते हुए आदर्श की ओर उन्मुख हों, और उसे प्राप्त करने का प्रयास करें। विश्व के प्रत्येक साहित्य में यथार्थवादी लेखन देखने को मिलता है।

सैद्धांतिक रूप से विशाल हिंदी साहित्य गद्य, पद्य, नाटक, उपन्यास, समालोचना आदि विभिन्न विधाओं से सौंदर्ययुक्त है। प्रत्येक विधा ने अनेकों साहित्यकारों को अपनी ओर आकर्षित किया है जिसको हिंदी साहित्य के विभिन्न युगों में साहित्यकारों के विभिन्न विधायी-लेखनों के रूप में देखा जा सकता है। हिंदी साहित्य की प्रत्येक विधा की प्रत्येक लेखन परंपरा स्वयं में विशिष्ट और उल्लेखनीय है और विभिन्न रुचियों वाले पाठकों को अपनी ओर आकर्षित करने में सक्षम है।

हिंदी पाठकों को प्रमुखतः दो वर्गों में वर्गीकृत किया जा सकता है- आदर्शात्मक पाठक जो साहित्य में समाज का आदर्श रूप देखना चाहते हैं, और यथार्थवादी पाठक जो साहित्य में यथार्थ चित्रण के पक्षधर हैं। यह उल्लेखनीय है कि पाठकों का एक बड़ा वर्ग यथार्थवादी लेखन को पसंद करता है क्योंकि यथार्थवादी लेखन उनका साक्षात्कार समाज की वास्तविकताओं से करवाता है। इस अर्थ में, यथार्थवादी लेखन परंपरा विशेषरूप से उल्लेखनीय है क्योंकि इस परंपरा के अंतर्गत साहित्यकार अपने स्वयं के अनुभवों, अवलोकनों और प्रत्यक्षीकरणों आदि केन्द्र में रखकर समाज के यथार्थ को चित्रित करने वाली रचनाएँ प्रस्तुत करते हैं।

यथार्थवादी लेखन का प्रमुख उद्देश्य समाज के यथार्थ को रचनाओं के माध्यम से मूर्त रूप प्रदान करना होता है। यथार्थवादी लेखन 'साहित्य समाज का दर्पण है' को सार्थक सिद्ध करता है। उदाहरण के लिए, पांडेय बेचन शर्मा 'उग्र' को यथार्थवादी लेखक के रूप में जाना जाता है क्योंकि उनके द्वारा सृजित साहित्य समकालीन सामाजिक प्रवृत्तियों और दशाओं का यथार्थ चित्रण प्रस्तुत करता है। उग्र जी के बारे में यह तथ्य महत्वपूर्ण है कि उनके लेखन की अनेकों प्रकार से निंदा की गई और आलोचनाओं के द्वारा उनके साहित्य लेखन मार्ग में बाधा उत्पन्न की गई, परंतु वे निर्भीकता से अपने समाज को अपनी रचनाओं में प्रतिबिंबित करते गए।

पांडेय बेचन शर्मा 'उग्र': एक जीवंत व्यक्तित्व

पांडेय बेचन शर्मा 'उग्र' का संबंध बीसवीं शताब्दी से है। पांडेय बेचैन शर्मा 'उग्र' का हिंदी साहित्य में लेखक, पत्रकार और साहित्यकार के रूप में विशेष स्थान है। बेचन शर्मा "उग्र" हिन्दी के साहित्यकार एवं पत्रकार थे। वह अपनी पारिवारिक परिस्थितियों की सुन्दर उपज थे जिन्होंने जीवन की विषमताओं का सामना करते हुए स्वयं को साहित्य जगत में उच्च कोटि के लेखक के रूप में स्थापित किया। उनके परिवार की अभावग्रस्तता और विषम परिस्थितियों के अंतर्गत जीविकोपार्जन हेतु उनके द्वारा किये गए विभिन्न प्रकार के कार्यों ने भटकते हुए बचपन के प्रारम्भ से ही उनको जीवन के कटु यथार्थ से परिचित करवाना प्रारंभ कर दिया था।

लाला भगवानदीन का सामीप्य जिसने उनको जीवन में आगे बढ़ने हेतु मार्ग प्रशस्त किया और साहित्य के विभिन्न अंगों के गंभीर अध्ययन हेतु प्रेरित किया, उनके लिए वरदान सिद्ध हुआ जिसने असीम प्रतिभा और साहित्य साधना के धनी बेचन शर्मा को बचपन से ही छोटी-छोटी कविताओं के माध्यम से काव्य रचना करने हेतु प्रेरित किया। काव्य सृजन के क्षेत्र में उनकी प्रथम सफलता प्रियप्रवास की शैली में "ध्रुवचरित्" नामक प्रबंध काव्य की रचना थी जिसने बेचन को एक नई पहचान प्रदान की।

अपनी साहित्य साधना हेतु उग्र जी ने आदर्शवादी साहित्य लेखन के स्थान पर चुनौती मानते हुए यथार्थवादी साहित्य लेखन को चुना। साथ ही, समाज और आलोचकों की परवाह किये बिना उन्होंने काव्य, कहानी, नाटक, उपन्यास आदि समस्त क्षेत्रों में उन्मुक्त रूप से अपने जीवन से जुड़ी अच्छी-बुरी, नैतिक और अनैतिक सभी घटनाओं को स्थान दिया, और इस प्रकार, प्रत्येक क्षेत्र में श्रेष्ठ कृतियाँ प्रस्तुत कर हिंदी साहित्य में आत्मलेखक के रूप में अपार ख्याति प्राप्त की।

उनके यथार्थ प्रेम को पत्रकारिता और उनके द्वारा लिखित नाटकों, कहानियों और उपन्यासों आदि में स्पष्टतः देखा जा सकता है। पाठकों के लिए उनके साहित्य अध्ययन करते समय यह निष्कर्ष निकालना कठिन नहीं कि उनकी कहानियों, उपन्यासों के पात्र कोई और नहीं, अपितु उनके परिवार, पड़ोस, नातेदार-रिश्तेदार ही हैं जिनको अन्य नामों से प्रस्तुत किया गया है।

उनकी निर्भीकता और स्वतंत्र लेखन कला को उनके द्वारा प्रकाशित और सम्पादित विभिन्न पत्रों जैसे- काशी के दैनिक "आज", "भूत", "स्वदेश", "मतवाला", "वीणा","विक्रम", "संग्राम", "हिंदी पंच" आदि में स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है जिनमें उन्होंने ऐसे अनेक विषयों और शीर्षकों को चुना जिन पर तत्कालीन समाज बात करने में भी संकोच करता था। उनके साहित्य भंडार और साहित्य विरासत में प्रमुख रूप से सम्मिलित हैं- **आत्मकथा**- अपनी खबर; **नाटक**- महात्मा ईसा, 1922, उजबक, चुंबन, 1937, डिक्टेटर, 1937, गंगा का बेटा, 1940, आवास, अन्नदाता माधव महाराज महान्; **एकांकी**- अफजल वद्य, भाई मियां, चार बेचारे; **उपन्यास**-घंटा, 1924, चंद हसीनों के खतूत,1927, दिल्ली का दलाल,1927, बुधुआ की बेटी,1928, शराबी,1930, सरकार तुम्हारी आँखों में, 1931, जीजीजी, 1943,

मनुष्यानंद,1955, कला का पुरस्कार,1955, कढ़ी में कोयला,1955, फागुन के दिन चार,1960; **कहानी संग्रह**- चिनगारियाँ,1923, शैतान मंडली,1924, इन्द्रधनुष,1927, बलात्कार,1927, चॉकलेट,1928, दोजख की आग,1929, निर्लज्जा,1929, सनकी अमीर, रेशमी, व्यक्तिगत, पंजाब की महारानी, उग्र का हास्य; **निबंध**- बुढापा, गाली; **काव्य**- ध्रुवचरित, बहुत सी स्फुट कविताएँ; **आलोचना**- तुलसीदास आदि अनेक आलोचनातमक निबंध।

उग्र जी बचपन में भाग्य की लिखावट के शिकार हुए जिसके तहत उनको जन्म से पहले ही उनके माता-पिता ने उनको एक दलित परिवार को अन्धविश्वास के कारण बेच दिया जहाँ उन्होंने अपने परिवार और पड़ोस में गरीबी, अभावग्रस्तता, अपराध, गाली-गलौज का वातावरण, महिलाओं की दुर्दशा और उत्पीड़न, वैश्यावृत्ति आदि देखी। साहित्य साधना का प्रतिफल बेचन का साहित्य कोष इस बात का प्रमाण है कि वह ऐसे साहित्य साधक थे जो जीवन पर्यन्त जीवन के विभिन्न पहलुओं से संबंधित सत्य की तलाश करते रहे, और सत्य और यथार्थ को अपनी लेखनी के माध्यम से अपनी बहु-विधाई रचनाओं के माध्यम से पाठकों के सम्मुख परोसते रहे।

उनके साहित्य में समाविष्ट हैं- विभिन्न सामाजिक बुराइयां एवं उनका उपहास, 'अपनी कहानी' में अपने भाई-बहनों की शैशवावस्था में मृत्यु का वर्णन, उनकी माँ द्वारा उनको एक दलित को उनको अकाल एवं असामयिक मृत्यु से बचाने हेतु बेचना, भारत की समकालीन दुर्दशा का वर्णन, 'आह्वान' के अंतर्गत स्वयं के उग्र स्वभाव की झलक, सामाजिक बंधनों का वर्णन, दलित समस्याएं, जजमानी प्रथा, गरीबी, बेरोजगारी, दलित शोषण, महिला उत्पीड़न, वैश्यावृत्ति तथा ऐसी अनेकों ऐसी घटनाओं और बुराइयों का वर्णन जिनके बारे में तत्कालीन समाज के कट्टरपंथी लोग बात करना भी अपराध समझते थे। 'दलित' या 'पतित' वर्ग और मारवाड़ी समाज उग्र जी के कथा साहित्य का प्रमुख समाज था जिसको संदर्भित कर उन्होंने अनेकों तत्कालीन सामाजिक समस्याओं को यथार्थ रूप में प्रस्तुत किया।

अध्ययन के उद्देश्य

1. हिंदी साहित्य के प्रमुख चिंतन और लेखन को प्रकट करना।
2. रूचि पर आधारित हिंदी पाठकों के वर्गीकरण को प्रस्तुत करना
3. यथार्थवादी चिंतन और लेखन के उद्देश्यों को प्रकट करना।
4. यथार्थवाद और आत्मकथात्मक तत्व के संबंध को सुनिश्चित करना।
5. यथार्थवादी लेखक के रूप में पांडेय बेचन शर्मा उग्र के व्यक्तित्व और कृतित्व को प्रस्तुत करना
6. यथार्थवादी लेखक पांडेय बेचन शर्मा के साहित्य में आत्मकथात्मक तत्व की उपस्थिति पर संक्षेप प्रकाश डालना।

साहित्य पुनरावलोकन

1. पद्मावती तिवारी (1997) अपने शोध प्रबंध जिसका शीर्षक है 'हिंदी गद्य साहित्य के विकास में पांडेय बेचन शर्मा उग्र का योगदान' में उग्र के उपन्यासों और कहानियों को संदर्भित करते हुए उल्लेख करती हैं कि 'यथार्थवादी उग्र ने समसामयिक स्तर पर सामायिक घटनाओं को नियोजित करके अपनी कृतियों के माध्यम से पाठकों तक पहुँचाया है। उग्र शैली के समर्थक उग्र अपनी रचनाओं चाहे कहानियां हों या उपन्यास, नाटक हों या एकांकी में बेवाक होकर घटनाओं को प्रस्तुत करते हैं'।[1]
2. वनिता, आर. (2000) अपने शोध अध्ययन 'द न्यू होमोफोबिया: उग्र'ज़ चॉकलेट' के अंतर्गत लिखती हैं कि 'पांडे बेचन शर्मा, जिन्हें उनके उपनाम "उग्र" से अधिक जाना जाता है, एक राष्ट्रवादी, समाज सुधारक और हिंदी लेखक और पत्रकार थे। उनके उपन्यास उपदेशात्मकता की ओर प्रवृत्त और सामाजिक संदेश से ओतप्रोत हैं। उनका लेखन राष्ट्रवाद, उत्पीड़ित महिलाओं और निचली जातियों के मुद्दों की वकालत करता है, और उच्च स्थानों पर भ्रष्टाचार, शराब, जुआ, व्यभिचार, वेश्यावृत्ति और सांप्रदायिकता की आलोचना करता है। वह जीवन भर अविवाहित रहे, विवादों को भड़काने के लिए जाने जाते थे और उन्होंने बड़ी संख्या में समाचार पत्रों और पत्रिकाओं का संपादन किया, जिनमें से अधिकांश थोड़े ही समय में बंद हो गईं'।[2]
3. मीनाक्षी सिंह (2002) अपने शोध प्रबंध 'पांडेय बेचन शर्मा उग्र का नाट्य साहित्य' के अंतर्गत लिखा है कि 'उग्र अति यथार्थवादी और नग्न सत्य के आग्रही चैतन्य कलाकार हैं'।[3] उग्र के बारे में यह कथन सत्य प्रतीत होता है क्योंकि उन्होंने अपने नाटकों, कहानियों और उपन्यासों एवं व्यंग्यों में ऐसे अनेकों नग्न सत्यों को प्रस्तुत किया है जिनके बारे में खुलकर बात करने के बारे में प्रायः सोचा तक नहीं जाता।
4. डॉ. रोसिटा जोसेफ वलियामट्टम (2015) ने उग्र की रचनाओं के अंग्रेजी अनुवाद को संदर्भित करते हुए 'इमोर्टलाइज़िंग दि इंडियन हर्टलैंड: रवि नंदन सिन्हा'ज़ इंग्लिश ट्रांसलेशन ऑफ़ क्लासिक हिंदी शॉर्ट स्टोरीज' में लिखा है कि डॉ 'भारत में दुनिया की सबसे पुरानी और समृद्ध साहित्यिक परंपराओं में से एक है। भारतीय साहित्य का इतिहास सैकड़ों भाषाओं और बोलियों का इतिहास है। मूल भारतीय साहित्य का अंग्रेजी जैसी वैश्विक भाषा में अनुवाद करना हमेशा

उनकी समृद्ध सांस्कृतिक विरासत, ज्ञान और ज्ञान के विशाल भंडार, मानवीय दृष्टि और ऊंचे आदर्शों को पूरी दुनिया के सामने प्रकट करने का एक सशक्त माध्यम रहा है'।[4]

5. वि. वि. ढोमणे (2015) अपने शोध अध्ययन 'सामाजिक सन्दर्भों में आत्मकथा साहित्य' के अंतर्गत उल्लेख करते हैं कि 'पांडेय बेचन शर्मा उग्र लिखित 'अपनी खबर' लेखक की आत्मकथा है जिसमें उन्होंने उन्मुक्त एवं निर्भीक होकर अपने जीवन के ऐसे सन्दर्भों को प्रस्तुत किया है जिनको सामान्यतः प्रकट करने का सहस लोगों में नहीं होता। 'अपनी खबर' का गहन अध्ययन पाठकों को न केवल उग्र जी के व्यक्तित्व में झाँकने में समर्थ बनाता है, अपितु उनके व्यक्तिगत जीवन के ऐसे अनेकों राज उजागर करता है जिनको प्रायः शर्म के कारण अपने लेखन में सम्मिलित नहीं करते'।[5]

प्राक्कल्पना

1. हिंदी साहित्य के आदर्शवादी चिंतन और यथार्थवादी चिंतन प्रमुख चिंतन और लेखन परम्पराऐं हैं।
2. रूचि पर आधारित हिंदी पाठकों के प्रमुखतः दो वर्ग हैं- आदर्शवादी पाठक और यथार्थवादी पाठक।
3. यथार्थवादी लेखन का उद्देश्य समाज के यथार्थ को बिना बदले हुए साहित्य में प्रकट करना है।
4. यथार्थवादी लेखन में आत्मकथात्मक तत्व पाया जाता है।
5. यथार्थवादी लेखक के रूप में पांडेय बेचन शर्मा उग्र का हिंदी साहित्य में महत्वपूर्ण स्थान है।
6. पांडेय बेचन शर्मा के साहित्य में आत्मकथात्मक तत्व की उपस्थिति और प्रधानता है।

शोधपद्धति

इस शोधपत्र को लेखिका के हिंदी साहित्य और हिंदी कथा साहित्य के पूर्व अध्ययन और ज्ञान और साथ ही प्राथमिक एवं द्वितीयक तथ्यों के आधार पर लिखा गया है। अध्ययन हेतु, तथा अध्ययन हेतु निर्धारित उद्देश्यों को प्राप्त करने हेतु और निष्कर्ष तक पहुँचने हेतु बेचन की कविताओं, नाटकों, उपन्यासों, कहानियों तथा साथ ही उन पर पूर्व में किये गए विभिन्न अध्ययनों से जो इंटरनेट की विभिन्न साइटों पर प्रकाशित शोध पत्र, शोध-आलेख और शोध-प्रबंधों के रूप में उपलब्ध हैं, से विषय सामग्री ली गई है और उसके आधार पर ही निष्कर्ष निकाला गया है।

निष्कर्ष

निष्कर्षतः, पांडेय बेचन शर्मा उग्र एक आत्मकथाकार थे जिन्होंने अपनी लगभग प्रत्येक रचना में चाहे वह किसी भी विधा से सम्बंधित हो, अपने जीवन की अच्छी-बुरी सभी सच्चाइयों को पाठकों के सम्मुख परोसा। आत्मकथात्मक तत्व उनके लेखन का अभिन्न अंग है। एक अच्छे लेखक की लेखनी से सटीक, संक्षिप्त, विषय केन्द्रित एवं यथासंभव विनम्र रचनाओं का सृजन होता है। पाण्डेय बेचन शर्मा 'उग्र' अपनी पारिवारिक एवं सामाजिक परिस्थितियों से उत्पन्न और निर्मित असीम क्षमताओं से युक्त साहित्यकार थे जिन्होंने यथार्थवादी लेखन परंपरा से जुड़कर यथार्थ-आधारित रचनाओं का लेखन किया और निर्भीक पत्रकारिता की। उनका जीवन संघर्षों से भरा हुआ था जिसमें बचपन के अनमोल समय में

14 वर्ष की आयु तक स्कूल जाकर अध्ययन करने के बजाय गलियों-सड़कों पर विभिन्न प्रकार के कार्य किया, किशोरावस्था और युवावस्था के कुछ वर्ष जेल में कैदियों के बीच रहकर बिताए। उनके द्वारा प्रकाशित और सम्पादित पत्रों जैसे 'आज, 'मतवाला, 'स्वराज्य, 'वीणा, 'विक्रम' आदि पत्र उनकी स्वतंत्र पत्रकारिता के गवाह बने। उनकी रचनाऐं यथा- 'चाकलेट, 'चन्द हसीनों के ख़तूत, 'फागुन के दिन चार, 'सरकार तुम्हारी आँखों में, 'घंटा, 'दिल्ली का दलाल, 'शराबी, 'यह कंचन-सी काया, 'पीली इमारत, 'चित्र-विचित्र, 'कालकोठरी, 'कंचनघट, 'सनकी अमीर, 'जब सारा आलम सोता है, 'कला का पुरस्कार, 'मुक्ता, 'ग़ालिब और उग्र'तथा 'अपनी ख़बर' आदि उनके यथार्थवादी चिंतन और लेखन के गवाह हैं। उनकी बीस कहानी संकलन, चौदह उपन्यास, सात नाटक, तीन प्रहसन व एकांकी और तीन काव्य संकलन, हास्य व्यंग्य, संस्मरण, आत्मकथा उनकी अनमोल साहित्य धरोहर है।

ब्राह्मण परिवार में जन्म, दलित परिवार में पालन-पोषण, अभावग्रस्त एवं संघर्षरत जीवन ने उनको अपनी समकालीन दशाओं के अवलोकन हेतु पारखी दृष्टि प्रदान की जिसने उन्हें होश सँभालते ही अपने घर में महिलाओं को अपने पिता और भाइयों के द्वारा प्रायः पिटते हुए, वेश्याओं को घर पर आते हुए, घर में जुआ चलते हुए और गाली-गलौज करते हुए, शराब पीते हुए देखने में सक्षम बनाया। उनका सम्पूर्ण कथा साहित्य जिसमें उनकी कहानियां और उपन्यास सम्मिलित हैं, उनके स्वयं के अनुभवों और अवलोकनों से ओतप्रोत हैं।

उनके कथा साहित्य के कथानक प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से उनके परिवार और पड़ोस से जुड़े हुए हैं और उनके कथा साहित्य के अधिकांश पात्र जो दलित और मारवाड़ी समाज का प्रतिनिधित्व करते हैं, वास्तव में उनके ही समाज के प्रतिनिधि हैं जिनके माध्यम से तत्कालीन सामाजिक बुराइयों को स्वतंत्र होकर उग्र जी ने अपनी रचनाओं में प्रकट किया है। यथार्थ अभिव्यक्ति और लेखन के कारण उग्र जी को सबसे बदनाम उपन्यासकार कहा जाता है। बनारसी दास चतुर्वेदी ने इनके उपन्यासों को 'घासलेटी साहित्य' तक कह डाला| आलोचकों ने इनकी 'उग्रता'

को ‘उल्कापात, ‘धूमकेतु, ‘तूफान’ या ‘बवंडर’ तक की उपमा दी डाली, परंतु इस सबके बाबजूद भी उग्र जी व्यथित हुए बिना निरंतर साहित्य साधना में लगे रहे और जीवन भर समाज का यथार्थ पाठकों को परोसते रहे|

संदर्भ सूची

1. पद्मावती तिवारी, 'हिंदी गद्य साहित्य के विकास में पांडेय बेचन शर्मा उग्र का योगदान', वी. बी. एस पूर्वांचल विश्वविद्यालय, 1997
2. आर. वनिता, 'द न्यू होमोफोबिया: उग्र'ज़ चॉकलेट', सेम सेक्स लव इन इंडिया, पालग्रावे मैकमिलन, न्यू यॉर्क, 2000
3. मीनाक्षी सिंह, 'पांडेय बेचन शर्मा उग्र का नाट्य साहित्य', वी. बी. एस पूर्वांचल विश्वविद्यालय, 2002
4. डॉ. रोसिटा जोसेफ वलियामट्टम, ‘इमोर्टलाइज़िंग दि इंडियन हर्टलैंड, रवि नंदन सिन्हा'ज़ इंग्लिश ट्रांसलेशन ऑफ़ क्लासिक हिंदी शॉर्ट स्टोरीज’, म्यूज़ इंडिया- द लिटरेरी ई-जर्नल, इशू 63, 2015
5. वि. वि. ढोमणे, 'सामाजिक सन्दर्भों में आत्मकथा साहित्य', इंटरनेशनल जर्नल ऑफ़ रेसर्चेस इन सोशल साइंसेज एंड इनफार्मेशन स्टडीज, वॉल्यूम II, इशू 4, 2015, 77-83